धमरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

II-१२

धर्मरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

II-९२

ॐ नमो रत्नत्रयाय॥

ॐ नमो श्रीशाक्यमुनये॥ पिण्डप्रविधिमाह॥

क्षापीगच्छमण्डलदनेवं॥ कोपलाञीनकाञी

नपञीवावीयाय॥ म्रक्षकाय॥ ॐ यथानन्तनवा

कायापूर्वविधिसत्त्वयथाचवनकाहिवृद्धीन

गावद्वी ८ माकापिण्डी पूर्वगामनोहय ८ सफपय ५

ल ८ सफनिध ल ८ पू फा कृवि धाचलाघकाठि

पलमात्रे ल ८ पूफा कृपिकाञमू कानी मध्वयाय

वर्षत्रयाद्ध लीकिकपिण्ड उत्तारनार्थ सूत्रकिमी

वनार्थ सूत्रवावकिप्रापकामनार्थं ८० द पिण्ड

सर्वेदामि स्वधा ॥ कोपत्रा जूनियाक ॥ ॐ नमो भगावते सर्वदु
र्गतिपरिशोधन राजाय तथागताया र्हते सम्यक्सं बुद्धाय
तयथा ॐ शोधने २ विसोधने २ शुद्धे वीशुद्धे सर्वकर्मान
वरण विसुधनं स्वधा ॥ लेखनथ ॥ केकनि … चाव
निरत्री कनिर धिकिल्लनह चरर सर्वकर्म्म पनेपचा निस
विमत्वाना छ स्वधा ॥ धविकया ॥ ॐ वीधिसत्वपिकुने

सोधा ॥ कर्म्म ॥ ॐ नमो भगावते अपरिमिताय ज्ञान
सुविनिश्चितेतेजो राजाय तथागताया र्हते सम्यक्सं
बुद्धाय तद्यथा ॥ ॐ पुने २ महापुने अपरिमितपु
ने अपरिमिताय पुन्य ज्ञान संभारो पचिते ॥ ॐ
सर्वसंस्कार परिशुद्धे धर्म्मे गगन समुद्गते स्व
भाव विशुद्धे महानय परिवारे स्वाहा ॥ लेखनथ्या ॥ पीकन्ती

यर्कि अपावान नुयर्कि॥ कुम्भनकियर्कि॥ ॐ किंदुरव
द्रस्वघा॥ थनलिज ओं थथू कोहयाकनथें न्ह्यकवा त
दयर्को॥ कलमत्रस्तूकनकायकथे॥ मंत्र॥ ॐ वज्रध्यानुगा
रुहूं॥ पूलिपिन्हुबकजदयर्कि॥ थुलिपूस्यलिथें न्ह्यक
वाद्नयथ्यामस्वानवीय॥ ॐ वेश्रीवनायवज्रपुष्पं प्र
तिछ्छ स्वाहा॥ ॐ अर्कोल्यायवजपुष्पंप्रतिछ्छ स्वाहा

॥ नत्रसंकवाय वजपुष्पंप्रतिछ्छ स्वाहा॥ ॐ अमिकालाय व
जपुष्पंप्रतिछ्छ स्वाहा॥ ॐ अमोघसिद्धिय वजपुष्पंप्रति
छ्छ स्वाहा॥ मामकिय वजपुष्पंप्रतिछ्छ स्वाहा॥ भीयंतिय
वजपुष्पंप्रतिछ्छ स्वाहा॥ पाण्डुरायै वजपुष्पंप्रतिछ्छ स्वाहा
॥ ॐ कावोथे वजपुष्पंप्रतिछ्छ स्वाहा॥ थुलि जुसनकमलि
थेन्ह्यक वाङ्कय॥ लंखनहासे विटक वाङ्थियर्कि॥

II-१२

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

र॥ शुभसम्वत ८८४ क्रिया गु श्री मांनि पू या नावु माधं या गु
पांविंक्कि चायेनो